Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-IV ISSUE-II FEB. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

हिन्दी का वैश्वीकृत रूप

ज्योति
सहायक प्रवक्ता
गोपीचंद आर्य महिला कॉलेज अबोहर।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। संसार के समस्त प्राणियों में मनुष्य को ही एक सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है क्योंकि उसे ही ईश्वर ने बोलने, सुनने की शक्ति प्रदान की है। समाज में रहते हुए मनुष्य को अपने विचारो का आदान प्रदान करना होता है। विचारों के आदान प्रदान के लिए मनुष्य को भाषा की आवश्यकता पड़ती है। भाषा वास्तव में व्यक्ति मात्र की पीड़ाओ, उल्लासों और संवेदनाओं का एक अनुवाद है। भाषा वैचारिक व मानसिक पटल पर उद्वेलित होने वाली भावनाओं का प्रतिबिम्ब है। विश्व में कई भाषाएं बोली जाती है। संभवत सभी भाषाएं संवेदना के स्तर पर जुड़ाव रखती है। परंतु हिन्दी भाषा अपने लचीलेपन के कारण इस संवेदनशीलता के अत्यंत निकट है। आज हिन्दी अपनी विकास प्रक्रिया में एक गतिशील नदी की तरह बहती हुई निरंतर जटिलता से सरलता की ओर बहती जा रही है।

हिन्दी का अर्थः– हिन्दी शब्द की उत्पत्ति सिंन्धु शब्द से हुई है। ईरानी भाषा के प्रभाव से सिन्धु के 'स' का 'ह' बन गया। यह पहले हिन्दु, फिर हिन्द बन गया। हिन्दु शब्द में ईरानी का इक प्रत्यय लगाने से 'हिन्दीक' बन गया है। हिन्दीक का परिवर्तित रूप ही हिन्दी है। हिन्दी के दो अर्थ प्रचलित है–

'हिन्द देश के निवासी व दूसरा 'हिन्दी'।
''हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्तान हमारा।''

वैश्वीकरण का अर्थ– शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से वैश्वीकरण का अभिप्राय स्थानीय क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओ के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। जिसे पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते है यह प्रक्रिया आर्थिक तकनीकी का संयोजन है।

21वीं शताब्दी का युग वैज्ञानिक युग माना जाता है। वैज्ञानिक युग होने के कारण दुनिया में दिन प्रतिदिन नए–2 आविष्कार हो रहे है। वैज्ञानिक युग ने समाज में उन्नति की लहर प्रचलित कर दी है। भूमण्डलीकरण ने हमारे जनजीवन को तो प्रभावित किया है। परंतु साथ ही में हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी को भी प्रभावित किया गया है। वैश्वीकरण ने समाज के प्रत्येक पक्ष में क्रांति ला दी है। इस ने भाषा के क्षेत्र में अनेक बदलाव देखने को मिला है। हिन्दी भाषा का साहित्य आज विविध भाषाओं के माध्यम से वैश्विक फलक पर पहुंच गया है। हिन्दीतर श्रेष्ठ साहित्य का अनुवाद इसके वैश्विक स्वरूप को प्रभावित कर सकता है। आज हिन्दी बदल रही है। हिन्दी में अन्य भाषाओं के शब्द भी शामिल हो गए है। अग्रेंजी भाषा हिन्दी के घर में आकर बैठी गयी है। इसने हिंदी को हिंग्रेजी' ही बना डाला है। हिन्दी में आ रहा बदलाव दो शैलियों में प्रकट हो रहा है।

- अग्रेंजी के सामान्य बोलचाल वाले शब्दों को सहज तौर पर समाहित करने वाले सामान्य स्वाभाविक शैली।
- हिन्दी के सरल शब्दों अग्रेंजी थोपने की शैली।

समाज में जब कोई नयी वस्तु का आविष्कार होता है। तो वह हमारे संपूर्ण जन जीवन को प्रभावित करती है उसी तरह वैश्वीकरण ने एक तरफ जहां एक मुक्त बाजार की दलीले पेश की है। वही दूसरी तरफ दुनिया की एक बड़ी उपभोक्ता को जन्म दिया, वही जन जीवन से जुड़ी वस्तुएं ही नहीं भाषा, विचार, संस्कृति कला सब कुछ को इसने प्रभावित किया। जब हमारे में विदेशी चीजे आती है तो अपने साथ अपनी भाषा, संस्कृति व तहजीब भी लाती है। धार्मिक की जगह, 'रिलीजियस' दोस्ती की जगह 'फ्रेडशिंप' फायदे की जगह 'एडवांटेज' को थोपने वाले परिवर्तन का बदलाव कहना जायज नही, यह एक किस्म की विकृति मात्र है, जो हिन्दी का नुकसान कर रही है पर अग्रेंजी का फायदा नही कर रही।

वैश्वीकरण के कारण हिन्दी का संगणक पर उभरा नया रूप वास्वत में उसके रोजगार का एक नया अवतार है। देश दुनिया का हाल जानने के लिए गूगल समाचार, समाचार डॉट काम. हिन्दी में उपलब्ध है। यह नई बाजार संस्कृति अब तक स्वायत्त रहे समाज और संस्कृतियों के रहन–सहन, आचार–विचार भाषा आदि को अपने तरीके से अनुकूलन कर रही है। संचार माध्यम इस संस्कृति के वाहन बने है और हिंदी माध्यम । वैश्विक बाजार संस्कृति के लिए हिन्दी सबसे अनुकूल भाषा के रूप में अपनाई जा रही है। इससे हिन्दी का विका विस्तार तो हो ही रहा है, संपूर्ण राष्ट्र में भाषिक संपन्नता का परिचय भी मिल रहा हैं। यह वैश्वीकरण का ही दबाव है कि यू. एन. ओ में हिन्दी की चर्चा हो रही है। विश्व की प्रमुख भाषा शामिल करने की दलीले दी जा रही है। मॉरीशस में हिन्दी सम्मेलन होना राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कोई विशेष उपलब्धि नहीं परंतु न्यूयार्क में विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन निश्चय ऐतिहासिक परिवर्तन है, हिन्दी की स्वीकृति का सकरात्मक पहलू है। भारतेदु युग से ग्लोबल युग तक अपना विस्तार करती हुई हिन्दी सूचना महामार्ग पर तेजी से बढ़ रही है। सही रूप से हिग्रेंजी ही जो हिन्दी की पुरानी बीमारियों से उसका सहज रूप से निदान कर रही है। गूगलसर्च इंजन' भी अब हिन्दी में उपलब्ध है। ढेर सारे हिन्दी ब्लॉग है जहां रवीन्द्रनाथ ठाकुर हदयेश जोशी न जाने कितने ही मिल जाएंगे जो अपनी डायरी अपनी बातें, कविताएं शायरी लेकर रोज इंटरनेट पर हाजिर हो जाते है। आज संसार के अत्याधुनिक साधनों मोबाईल व इंटरनेट जहां अग्रेंजी का राज्य करता था वहां भी हिन्दी अपना अधिकार जमाए हुए है। आज इन यंत्रो से जारी टंकण हेतु अनेक एप्प उपलब्ध हो रहे हैं जिससे हिन्दी लोकप्रिय हो रही है। हिन्दी विश्व की निराली भाषा है जैसी लिखी जाती है। वैसे ही उच्चारित की जाती है। इसकी इसी प्रवृति ने जन–2 में अपने प्रसार को बढ़ा दिया है व सबकी लोकप्रतिय हो गयी है।

कम्प्यूटर युग मे विश्व सिकुड़ गया है। आज घर बैठे देश के किसी भी कोने से संपर्क किया जा सकता है। वाणिज्यिक सम्बन्ध स्थापित किए जा सकते है। ऐसे में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा को मान्यता मिलेगी। भारत की जनसंख्या को देखते हुए और यहां के बाजारो को देखते हुए विश्व के व्यापारी समझ गए कि हिन्दी के माध्यम से इस बाजार में स्थान पाया जा सकता है। इस हिन्दी की माध्यम से इस प्रकार हिन्दी भाषा ने एक ओर तो सामाजिक भूमिका में सहायता प्रदान की वही दूसरी ओर अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में प्रगति ला दी।

वैश्वीकरण का जो प्रभाव भाषा पर पड़ता है। वह एकतरफा नही होता। विश्व की सभी भाषाओं पर इसका प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव पिछले दो हजार वर्षो से देखा जा सकता है। विगत में यह प्रभाव उतना नही दिखाई देता था और यह मान लिया जाता था कि कोई भी शब्द उसकी ही भाषा का मूल शब्द है। ऐसे कई शब्द अग्रेंजी में भी पाए जाते है। पैदल–पैदल, दांत–डैंटल।

प्रभुजोशी के अनुसार,

''भूमंडलीकरण की जो सैद्धातिंकी है वो एकरूपता के पक्ष में जाती है, वो मानती है कि अगर एक भाषा हेागी तो भूमंडली करण के विस्तार में मददगार साबित होगी।

हिन्दी का व्यापाक प्रयोग जनसंचार माध्यमों का अनिवार्य अंग बन गया है। मुक्त बाजार व वैश्वीकरण के दबावों ने हिन्दी को जरूरत और मांगो के अनुसार ढाल लिया है। भारतीय भाषाओं के लिए टेक्नोलाजी विकास नामक कई प्रोजेक्ट जोड़े गए। सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी भाषा का प्रचलन बढ़ रहा है। वही विदेशी कंपनियो ने अपनी वेबसाइटों पर हिन्दी दैनिक पत्र–पत्रिकाओं का इंटरनेट के माध्यम से प्रचार प्रसार किया जा रहा है।

आज हिन्दी किसी एक राष्ट्र की भाषा न रहकर अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपनी भूमिका निभा रही है। विदेशों में इसका अध्ययन करवाया जा रहा है। कम्प्यूटर और सॉफटवेयर की दुनिया में भारतीयों का वर्चस्व बढ़ने के बाद एक ऐसी पीढ़ी सामने आयी है जिसके लिए अग्रेंजी दूसरी भाषा की तरह है। इस पीढ़ी के लोग आपसी बातचीत मंनोरंजन के लिए अपनी मातृभाषा का ही इस्तेमाल करते है। आज हिन्दी ने अपने जड़े इंटरनेट पर ही नहीं ब्लकि मोबाईल में भी जमा ली है। अब मोबाईल के द्वारा संदेश हिन्दी में करना संभव हो गया है। हिन्दी के वैश्वीकरण संचारीकरण को बनाए रखने के लिए हमें उसकी परम्परा को भी कायम रखना होगा। इसकी बोलियों को भी साथ लेकर चलना होगा और साथ–साथ में इसमें शब्दों की समृद्धि भी करनी होगी जिससे इसकी व्यापकता कायम बनी रहे। अल्का सरवगी के,

''यह सच है कि अग्रेंजी का वर्चस्व बढ़ता ही जा रहा है। लेकिन साथ ही भाषा के स्तर पर एक नई शब्दावली का भी गठन हो रहा है। जो आज के जीवन यथार्थ को पकड़ने में मददगार हो रही है और इस तरह हिन्दी एक समृद्ध भाषा बन गयी है।

संदर्भ

i. डा. बहादुर सिंह – हिन्दी साहित्य का इतिहास
ii. डा. हरिवंशराय बच्चन – हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास
iii. मनोज पाण्डेय – वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी का स्वरूप गवेषणा, 2011 पृष्ठ – 105
iv. डा. विमलेश शर्मा – आलेख वैश्वीकरण और हिन्दी प्रसार व प्रवाह अपनी माटी ईमासिक पत्रिका ;ISSN 2322-0724

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com